अभिव्यक्ति

Sixth Edition

November 2012 - January 2013

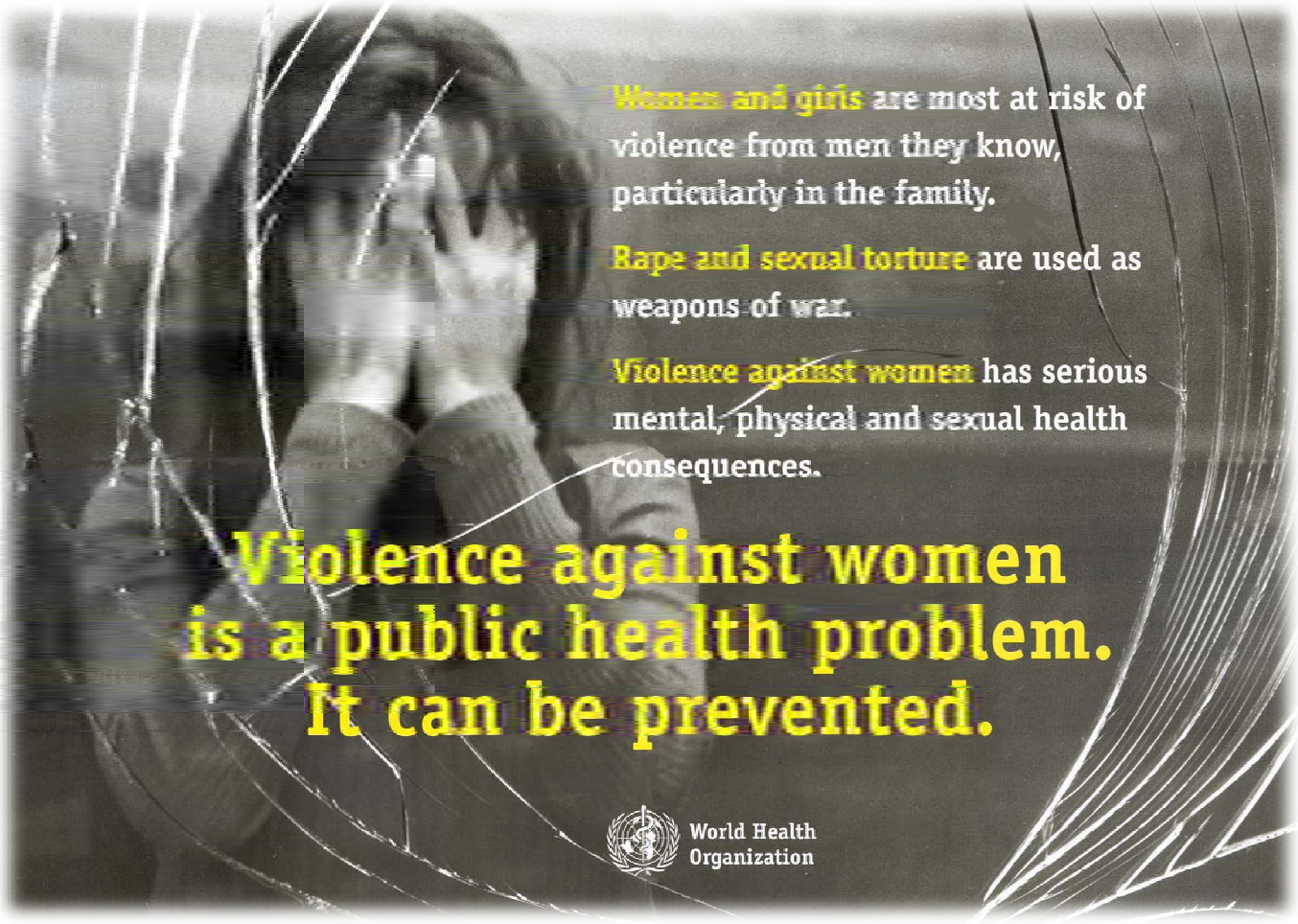

CSIR-Central Building Research Institute
Roorkee

सम्पादकीय

मित्रों,

नववर्ष 2013 की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं ! हम आपके सम्मुख लेकर आये हैं "*अभिव्यक्ति*" का एक और अंक। यह सहज एक संयौग है की हमारा ये अंक लोहड़ी, पोंगल और मकर-संक्रांति के पावन अवसर पे आ रहा है। आप सभी को इन त्योहारों की हार्दिक बधाइयाँ और ढेरों शुभकामनाएं!

यह समय है कि हम विगत वर्ष की घटनाओं पर भी दृष्टिपात करें व उनसे कुछ सीख लें। यूँ तो 2012 पूरा ही गतिविधियों से भरा रहा है। संस्थान के स्तर पर हमने अनेक वैज्ञानिक संगोष्ठियों का सफल आयोजन किया, 12वीं पंचवर्षीय योजना के तहत अनेक शोध परियोजनाओं का शुभारम्भ किया। संस्थान में 17 उर्जावान युवा वैज्ञानिक हमारे सी एस आई आर- सी बी आर आई परिवार में शामिल हुए। परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहा। एक ओर हमने कला व साहित्य जगत की बहुत-सी महान हस्तियों को खोया, तो दूसरी ओर जन-आन्दोलनों ने देश को झकझोर के रख दिया।

पिछले माह ही "यत्र नारियस्त्र पूज्यते रमन्ते तत्र देवता" वाले देश में बर्बरता की एक ऐसी घटना घटित हुई, जिसने हम सभी को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि वास्तव में क्या हमारा इतना नैतिक पतन हो गया है। जिस देश की संस्कृति विश्व में सबसे समृद्ध और वैभवशाली मानी जाती है, उसी देश में नारी के साथ ऐसी हैवानियत। क्या होता जा रहा है, हमारी सोच को, हमारे समाज को?

दोस्तों, समय आ गया है सोच को, सामाजिक व्यवस्थाओं को बदलने का, व निर्माण करने का ऐसे समाज का जिसमें हमारी बहन, बेटी व माँ उन्मुक्त भाव से रह सकें और हम कह सकें "नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ-पग-तल की"।

हम "*अभिव्यक्ति*" के इस अंक के माध्यम से हम सभी देश की पीड़ित नारी समाज के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करना चाहते हैं।

प्रदीप चौहान

मुख्य सम्पादक "*अभिव्यक्ति*"

by riya

Is it a punishment being a survivor?

- ***Piyush Mohanty***

It was just a normal evening talk in the hostel on night of 17th December, 2013 when I was just cynical about India's condition in cricket as India lost the Test series from England. Again a downslide, which has pushed India's cricket to a dark corner in 2012. But soon one of my friends questioned me about the occurrence of a barbaric rape in Delhi, which I was quite unaware. We, as a country, has done also very little to stop all these. But the moment I heard about the seventh rapist, which happened to be the rod, my blood started really simmering. Even the stereotype 'Yaamraj' also does not give such a harsh punishment for the sinners. Justice Krishna Iyer has observed in a very famous case of Rafiq v. State :"*A murderer kills the body but a rapist kills the soul*."Think about the young girl of 23. What had she done? Why was she punished? Why was she forced to be played by those six brutes? All the questions have one answer, i.e., because our system has done very little to keep up the security and safety of "***ghar kii bahu aur betii***".

We have thought about the corrective actions numerous times and we have reached at the same conclusion every time. Yes, there is an urgent need to change the psychic condition of the society. Nothing else will help. Not any capital punishment or any life imprisonment. Our society is as aware as we all are.

The one and only thing, which will help the situation improve is the change in the psychology of the general mass. Everyone needs to be aware of the equality of men and women. There is a need to change the attitude of the patriarch society. Mrs Prabha Sridevan, former judge of Madras High Court highlighted this issue through some examples in a public forum of The Hindu. She explained how a male judge from a court of California said that rape never happens without the consent of the women. It really proves that what we say as the western countries are way behind the civilization. If there is the consent of woman, then why it will be called a rape! There is another judge from some court in US who really made mockery of him when he said that it is quite legal to fire a lady employee who is irresitively attractive. These examples are a few, which elucidates the sick mentality that is prevalent in the society. What a girl wears, where she goes, what she does should be completely her own private affair. Otherwise we are taking away the fundamental right to

‘live’, ‘express’ and ‘dignity’ out of her, which is quite unconstitutional. In India, we are always a step ahead. First of all, we don’t want female kid, so we carry out female feticides. Then when the left out female kid grows up, she is sexually offended in some or the other way. I am really not able find the catch in it. Really we are showing to the world that we are amoral as well as illogical. Our patriarch India is considered to be in the 5 worst places for women in the world.

There is a need to change the attitude and the behavior we show to a victim after she has gone through this physical and mental trauma. She is as good as a dead body as we deem her to be after she becomes a victim of this heinous brutality. The accused does not feel shame. But then a cloth is wrapped around the face of the victim because our hungry media makes the life of the victim miserable. The victim is stigmatized. No one bothers about how soon the judgment should come or what is the deserving punishment. No media questions the law makers sitting in the dome-shaped building in the capital. It is really the parody of the ordered society, which we are given by our fore fathers. We should run campaigns to make people aware of it and make the victim feel being a part of society. This victim can be any of us. Don’t wait till the water runs into your house.

The investigating police officer, the medical officer, the litigation officer all need to be more patient, sensible and caring taking into consideration the mental and physical condition of the victim. New Delhi has the highest number of sex crimes among India’s major cities, with a rape reported on average every 18 hours. Seeing the mammoth-ness of this crime, more number of fast-track courts shall come up. We can’t show step motherly attitudes to the victims just because she was unable to resist the physical power of an animal. She should not pay for the carnal desire of an unleashed unsocial animal. The police officer and the doctors should try to restore the psychological and physical power of the victim.

Really the time has come. The volcano has come out. Let this magma of activity and awareness flow through the each human chain. If the lawmakers can make some appropriate and prudent law, the law-abiders will stand by it certainly. Let us stop treating the women as sex objects, be it in raunchy item numbers in bollywood or for any commercial products. If we can certainly follow these certain rules to lead an ordered life, our future generations will have a peaceful earth to cohabitate with each other.

हमारे प्रिय कवि: 'पाश'

– ***रणधीर 'भारत'***

पंजाब के जालंधर जिले में सन 1950 में जन्में अवतार सिंह संधु *'पाश'* का जीवन कई मायनों में अनोखा रहा। पहला तो यही कि ***साहित्य के जरिये भी आतताईयों के चेहरे पर वार किया जा सकता है और वह वार इतना तिलमिला देने वाला हो सकता है कि वे आपकी जान भी ले लें। दूसरा यह कि जीवन को मापने का तरीका हमेशा से गुड़वत्ता ही हुआ करता है, उसकी मात्रात्मकता नहीं।*** पाश के 37 वर्षीय जीवन की लम्बाई और सौ–सवा–सौ कविताओं की संख्या उन तमाम लोगों के जीवन और पुस्तकों पर इक्कीस बैठती है, जिन्हें आठ-नौ दशकों का भरा-पूरा जीवन नसीब हुआ और जिनकी किताबों की सूचियाँ इस व्यवस्था की विडंबनाओं जितनी ही लंबी हैं। एक तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण अनोखापन यह देखा जा सकता है कि न तो पाश को न ही उनके चाहने वालों को, तब या अब, किसी भी कटघरे में खड़े होकर जबाब देना पड़ा है, या पड़ता है कि इन कविताओं का आशय वह नहीं वरन यह था। न तो उनके पास कोई 'महामौन' की 'गुफा-कन्दरा' है और न ही शब्दों की ओट में खेली गयी बाजीगरी, वरन वे तो सीधे-सीधे स्वीकार करते हैं कि ***मैं शायरी में क्या समझा जाता हूँ/ जैसे किसी उत्तेजित मुजरे में/ कोई आवारा कुत्ता आ घुसे।***

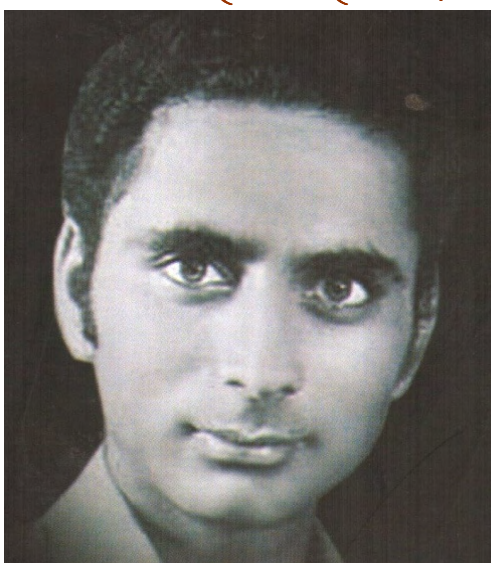

पाश की काव्य-यात्रा 15 वर्ष की उम्र से ही आरम्भ हो गयी थी और 20 वर्ष के होते-होते जब उनका पहला संकलन *लौह कथा* छपा था, तब वे पंजाबी के एक प्रतिष्ठित कवि बन गए थे। पाश के कुल चार कविता संग्रह मूल पंजाबी में प्रकाशित है, और ये हैं ***लौह कथा* (1970), *उडडदे बाँजा मगर* (1974), *साडे समियाँ विच* (1978)** और ***लड़ान्गे साथी* (1988)** और हिंदी में अनूदित दो संग्रह ***बीच का रास्ता नहीं होता*** और ***समय ओ भाई समय*** भी प्रकाशित हुए हैं।

पाश की कविता हमारी क्रांतिकारी काव्य-परंपरा की अत्यंत प्रभावी और सार्थक अभिव्यक्ति है। मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण पर आधारित व्यवस्था के नाश और एक वर्ग विहीन समाज की स्थापना के लिए जारी जन-संघर्षों में इसकी पक्षधरता स्पष्ट है। 'पाश' को समझने के लिए किसी खास कविता का चयन करना आवश्यक नहीं है, आप कही से भी उठाकर उन्हें उद्धरित कर सकते है। आपको वही 'पाश' मिलेंगे, जिसे आप पढते और समझते आये थे। ध्यान रहे कि यह 'पाश' की एकरसता या दोहराव नहीं है, वरन उनकी प्रतिबद्धता और जन-पक्षधरता है, जो आईने की तरह साफ़ और स्पष्ट है और यही स्पष्टता उनकी कविता की विशेषता और बड़ी ताकत है।

१०

हाथ यदि हों तो
जोड़ने के लिए ही नहीं होते
न दुश्मन के सामने खड़े करने के लिए ही होते हैं
यह गर्दनें मरोडने के लिए भी होते हैं
हाथ श्रम करने के लिए ही नहीं होते
शोषक के हाथो को तोडने के लिए भी होते हैं

२०

क्रांति कोई दावत नहीं, नुमाइश नहीं
मैदान में बहता दरिया नहीं
वर्गों का, रुचियों का दरिन्दाना भिड़ना है
मरना है, मारना है
और मौत को खत्म करना है

३०

मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती
गद्दारी-लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती
सबसे खतरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
न होना तड़प का सब सहन कर जाना
घर से निकलकर काम पर
और काम से लौटकर घर जाना
सबसे खतरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना

४०

भारत –
मेरे सम्मान का सबसे महान शब्द
जहाँ कहीं भी प्रयोग किया जाए
बाकी सभी शब्द अर्थहीन हो जाते है
इस शब्द के अर्थ – खेतों के उन बेटों में हैं
जो आज भी बृक्षों की परछाइयों से
वक्त मापते हैं
और वह भूख लगने पर
अपने अंग भी चबा सकते हैं

५०

हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लिए
हम लड़ेंगे साथी, गुलाम इच्छाओं के लिए
हम चुनेंगे साथी, जिन्दगी के टुकड़े
कत्ल हुए जज्बों की कसम खाकर
बुझी हुई नजरों की कसम खाकर
जब तलवार न हुई, लड़ने की लगन होगी
कहने का ढंग न हुआ, लड़ने की जरूरत होगी
हम लड़ेंगे, कि लड़े बगैर कुछ नहीं मिलता
हम लड़ेंगे, कि अब तक लड़े क्यों नहीं
हम लड़ेंगे, अपनी सजा कबूलने के लिए
लड़ते हुए जो मर गए
उनकी याद जिन्दा रखने के लिए
हम लड़ेंगे साथी

६०

युद्ध हमारे बच्चों के लिए गेंद बनकर आयेगा
युद्ध हमारी बहनों के लिए
कढ़ाई के सुंदर नमूने लायेगा
युद्ध हमारी बीवियों के स्तनों में दूध बनकर उतरेगा
युद्ध बूढ़ी मां के लिए निगाह की ऐनक बनेगा
युद्ध हमारे बड़ों की कब्रों पर फूल बनकर खिलेगा
वक्त बहुत देर
किसी बेकाबू घोड़े जैसा रहा है
जो हमें घसीटता हुआ
जिंदगी से बहुत दूर ले गया है
कुछ नहीं बस युद्ध ही
इस घोड़े की लगाम बन सकेगा
बस युद्ध ही इस घोड़े की लगाम बन सकेगा।

७०

मैं आजकल अखबारों से बहुत डरता हूं
जरूर उनमें कहीं न कहीं
कुछ न होने की खबर छपी होगी।
शायद तुम नहीं जानते, या जानते भी हों
कि कितना भयानक है कहीं भी कुछ न होना
लगातार नजरों का हांफते रहना
और चीजों का चुपचाप लेटे रहना
किसी ठंडी औरत की तर

८०

मेरे दोस्तो,
हमारे समय का इतिहास
बस यही न रह जाये
कि हम धीरे-धीरे मरने को ही
जीना समझ बैठें
कि हमारा समय घड़ी के साथ नहीं
हड्डियों के गलने-खपने से नापा जाए

९०

मैं अब विदा लेता हूँ – मेरी दोस्त
प्यार करना और लड़ सकना
जीने पर ईमान ले आना मेरी दोस्त,
यही होता है
धूप की तरह धरती पर खिल जाना
और फिर आलिंगन में सिमट जाना
बारूद की तरह भड़क उठना
और चारों दिशाओं में गूँज जाना
जीने का यही सलीका होता है – मेरी दोस्त॥

० ० ० ० ० ० ०

I am a Woman

- *Monalisa Behera*

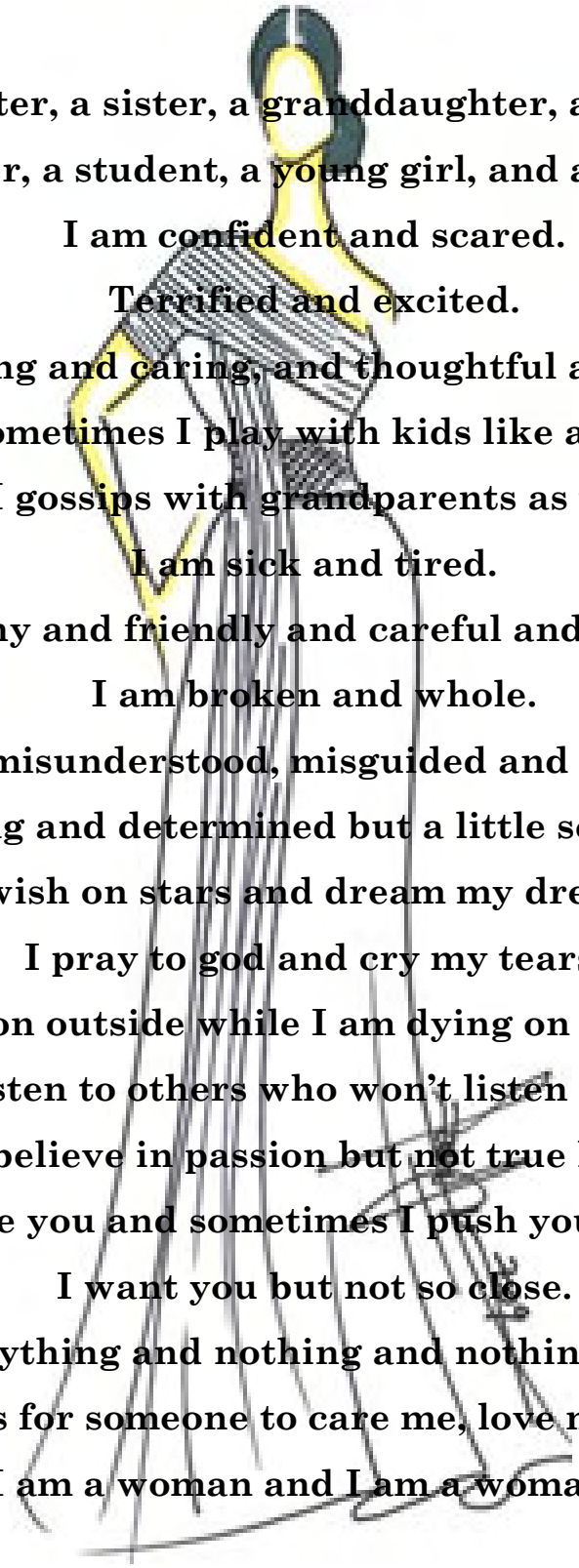

I am a daughter, a sister, a granddaughter, a niece, a friend.

I am a partner, a student, a young girl, and a grown woman.

I am confident and scared.

Terrified and excited.

I am loving and caring, and thoughtful and hopeful.

Sometimes I play with kids like a kid.

Sometimes I gossips with grandparents as their partners.

I am sick and tired.

I am shy and friendly and careful and careless.

I am broken and whole.

I am misunderstood, misguided and mislead.

I am hardworking and determined but a little scared on the inside.

I wish on stars and dream my dreams.

I pray to god and cry my tears.

I smile on outside while I am dying on the inside.

I listen to others who won't listen to me.

I believe in passion but not true love.

I love you and sometimes I push you away.

I want you but not so close.

I am everything and nothing and nothing all at once

And all I want is for someone to care me, love me and respect me.

I am a woman and I am a woman...

कवितायें

उष्ण रक्त में और उबाल लाओ
समाज़ को अदृश्य नज़र से देखो
फैली विरक्तियों से संघर्ष करो
एक नयी भारत बनाने की सोच लाओ
समय से अपनी मुट्ठियों को भींचो
लो तूफान आने से पहले खुद को तैयार रखो
बांध दो तूफान को अपनी तरंगो से
सूर्यसे दूर ही भ्रष्टाचार को मिटाने की ताक़त लाओ
ढोंग और पाखण्ड को परवर्तित करो अपनी छाया से
अदृश्य शक्ति को अंतरात्मा में प्रवेश कराओ
इतनी ज़ोर से चीखो, कुरीतियाँ भस्म हो जाये
दृढ़संकल्प से, एक नयी भारत बनाने की सोच लाओ

- *दिलीप उपाध्याय*

हाँ कल्पित हैं, मेरी प्रेम कहानियाँ
हाँ ठीक मेरी नाम की तरह, 'भारत'
पर तुम्हें ऐतराज क्यों है...
क्यों नहीं स्वीकार पाते तुम... 'सत्य'
हमारी मुस्कुराहटों का
पंछियों के करलव करते स्वरों का
नदी-झरनों की करकल पदचाप का
पहाड़ों की वादियों में गूँजते अनुनाद का
कैसे नकार सकते हो तुम कोशिशों को
मीठे दरियाओं का, जो उड़ेल रहीं हैं
अपना बूंद-बूंद, करवाहट लिए विशाल सागर में
परवानो की आहुती, नहीं देखते तुम
जो शमा की चाहत में, झुलसा लेता है अपना जिस्म
क्यों नहीं भाते तुम्हें, हिमालय के तेजोमय शिखर
लहलहाते गेहूँ के साथ, सरसों के फूलों से आच्छादित
धरती की मादकता, आकर्षित नहीं करती तुम्हें
ऊँघते-अलसाए जंगल... क्या बाध्य नहीं करती तुम्हें
कुछ देर ठहर कर, झांक सको अपने अंदर
उलझनों से परे एक ऐसे संसार की रचना में
जहां सिर्फ 'हमतुम' हैं, और 'प्रेम' है

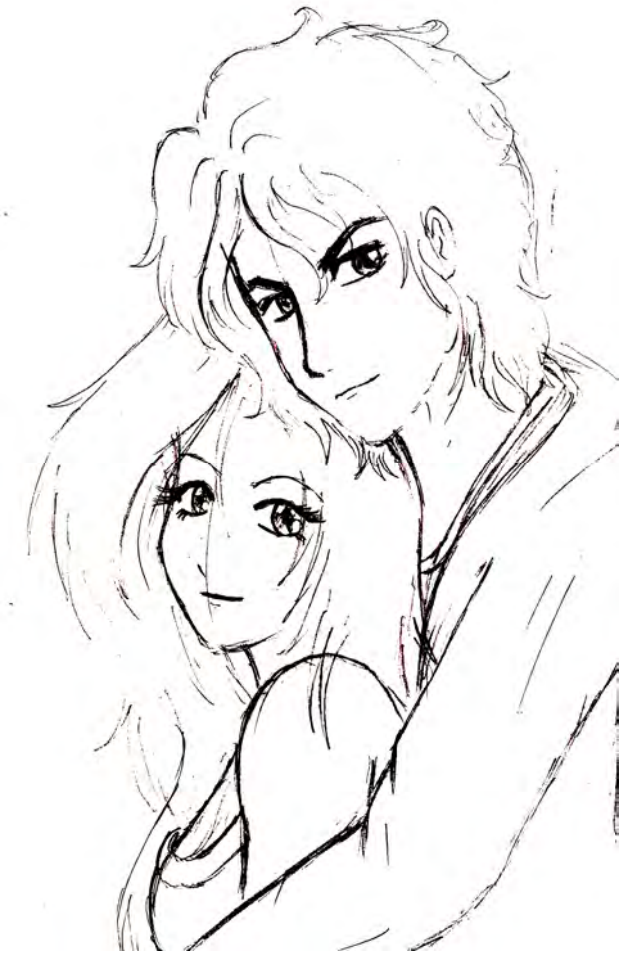

- *रणधीर भारत*

माँ

- *अमन कुमार*

जब माँ थी, तब बड़ा बोझ लगती थी। उसकी बीबी को बड़े होते बच्चों को खुद उसको भी हर बार गुस्सा आ ही जाता था। जब भी किसी की गलती होती, लड़ाई माँ से ही होती थी।

अरे वो कहाँ, किसी पर बोझ थी ? पापा जी की पेन्सन से ही, घर का दूध, बिजली का बिल, अखबार, राशन, बच्चों का जेब खर्च, तो पापा जी के टाइम से ही आ रहा था, जिस पर सबका बराबर हक था। पर माँ को सब ही अवांछित मानते रहे।

माँ का क्या हक था? ये कभी न सोचा गया। जिंदगी यूँ ही चलती गयी। फिर, एक दिन माँ भी दुनिया के बन्धनों से आज़ाद हो गयी, पर खर्च बढा गयी। उनका पुरना घर था, सो एक कमरे में उनका सामान बंद करके, बांकी किराये पर दे दिया गया। पेन्सन जो बंद हो गयी थी।

उस बंद सामान में माँ की तस्वीर थी। जो उसकी शादी से पहले की थी। उसमें माँ बड़ी ममतामयी और तेजोमय दिख रही थी।

शादी के बाद आचनक तस्वीर में माँ का चेहरा, धूमिल हो गया था। साफ़ करने पर, कुछ दु:ख के भाव नज़र आने लगते थे।

आज माँ के जाने के 20 साल बाद, जब उसके सुपुत्र ने उस बंद कमरे से माँ का सामान निकला। चूँकि, नोकारों को रहने के लिए वही कमरा बचा था। पुत्र के बंगले में, वो नोकारों के माँ-बाप जैसे लगते थे, जिनकी जगह घरों में नहीं होती, ऑल्ड-एज्ड होम में होती है।

कमरे को साफ़ करते समय, माँ के वही पुरानी तस्वीर मिली। इस बार, पहली दफे माँ तस्वीर में मुस्करा रही थी, और वो रो रहा था।

Gopala's Mother

- ***Koushik Pandit***

It's a story of Kamala. She used to be the sole maid servant in the house of Mr Pandit. She used to call Mrs Pandit as *MemSaheb,* who in turn used to call her by the name "Gopala's mother". Gopala was her son's name. She was sent from *Memsaheb's* maternal house for taking care. Soon *Memsaheb* gave birth to a son. She used to do baby-sit for the son. Due to her sincere work, Mr and Mrs Pandit were very happy. So they used to present her new sarees, aalta-sindur (signs of Hindu married women) and some cash as a perk, along with 15 days of paid leave. It was the only time in the year when she used to go to her home village, where her only son Gopala lived with his father, who was a van-puller. It is a story when Gopala was only 10 years old. All day long, his father used to pull the van loaded with food grains or railway passengers, and the little boy used to bunk his classes and play marbles and other games in the muddy fields under the shadow of huge banyan trees near the Shiva Mandir. At night, his father used to come drunk and out of his alcoholic aggression, he used to beat Gopala very badly. He never cared for Gopala's education or his quantum of meal. Sometimes Gopala preferred not to come back to home at night and used to go to nearby villages where local open theatres were played all night long. But seeing the kid's absence, Gopala's father turns into a demon and punches him as if he was a sand bag. Gopala's mother wasn't aware of all these at all. When she used to visit them, Gopala never told her about all his misery. Instead he was very happy by seeing his mother's face after a long time. She used to bring new clothes, some cheap plastic toys for him. But it was her husband who demanded her of lot of money thinking she is enjoying luxuries of residing in a town and saving all her monthly wages. She used to save her wages in a bank account, thinking this will come into some help when Gopala will grow up and like her mistress's son Raja, he'll also get admission in some good high school. But Gopala never cleared admission test to 5th class and he left schooling after his 3rd failed attempt and started to work as a labourer at paddy fields under some miser big farmers.

In town, Gopala's mother did not come to know all these. She can't stay with her son and husband as she has to earn for her son's education. Days were passing by like this. Raja grew up, finished schooling and was sent to some engineering college far from his hometown. Gopala's mother along with Raja's mom, cried a lot when he departed. Soon Gopala's mother became older and also her need of staying at Raja's house was finished.

More valid reason was that her working efficiency was diminishing day by day and Raja's parents thought it to be wastage of money. But they couldn't just ask her to leave the job

and recruit a young maid without any proper reasoning. So one day, Raja's mom made a plan. She hid her gold ring and alleged Gopala's mother for stealing that piece of gold. She was not blamed implicitly but she could anticipate what actually her masters' desires are. So one night, taking all the blames in her name, Gopala's mother left her last 18 year's residence in the darkness of night. Next morning, her masters took a breath of relief.

Months after Raja came back to his hometown for spending his vacation after 1st semester. Not to anyone's surprise, he started looking for Gopala's mother as soon as he stepped inside his house. His parents were prepared with their false story, accusing their old faithful maid for stealing the gold ring. But Raja couldn't believe in that. He was very much disheartened and didn't take lunch. Next day, he decided to visit the village where Gopala and his father used to live in. He collected the address from his father's contact diary and reached the village. After day long searching and asking so many people, finally he could meet with Gopala. He was informed that Gopala's mother never came back to her village. They were expecting her in the next month's Durga Puja. In these last few months, she has stopped sending them money. Raja was in immense pain and was ashamed of his parent's work. But he couldn't tell him the real incident. As he was heading for railway station, a postman came and gave a telegram in Gopala's hand. His face became filled with anxiety. He showed that to Raja. "Plz visit the address below asap. Your mother is seriously ill." Gopala availed the train along with Raja and reached the address as it was written in the telegram. It was another place in Raja's hometown. As they entered the house, an old lady welcomed them. Being asked she said in a wet voice, "Kamala was brought from streets to this old-age home few months back by some of our volunteers. All the time she used to keep silence and on being asked, she only said that she was not the stealer, throwing a blank look." "Where's she now?", Raja almost shouted. "She passed away last night and today morning she was taken to a cemetery." A tear drop felt down from Raja's eyes as silence prevailed in the visiting room.

Photograph by – Monalisa Behera

“हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए”

“गंगा की कसम, युमना की कसम
ये ताना बना बदलेगा
तू खुद तो बदल, तू खुद तो बदल
तू खुद तो बदल, तब तो ये जमाना बदलेगा"

Release of Abhiwyakti...

Our thanks to Shefali, Monalisa, Aankanksha

Chief-Editor: Pradeep Chauhan

Editors: Randhir Choudhary
Piyush Mohanty
Riya Bhowmik
Koushik Pandit
Debdutta Ghosh